Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 1
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

गुलशेर अहमद खाँ 'शानी' की कहानियों में जनजातीय जीवन

अनुपम कुमार
असि. प्रोफेसर, के. के. कालेज, इटावा, उत्तर प्रदेश।

Article Info

Accepted : 20 Jan 2025
Published : 10 Feb 2025

Publication Issue :
January-February-2025
Volume 8, Issue 1

Page Number : 85-90

शोध सारांश– गुलशेर अहमद खाँ 'शानी' हिन्दी साहित्य में जनजातीय जीवन पर लेखनी चलाने वाले रचनाकार रहे हैं। इन्होंने उपन्यास, कहानी, कविता आदि विधाओं पर लेखनी चलाई है। इनका काला जल उपन्यास हिन्दी साहित्य की प्रमुख कृति है। गुलशेर अहमद खाँ 'शानी' का जीवन बस्तर क्षेत्र के जनजातीय समूह के सम्पर्क में व्यतीत हुआ। उन्होंने अपने चारों ओर के वातावरण में व्याप्त जनजातीय तत्वों को साक्षात अनुभूत किया। इस अनुभूति को उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से जन समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। जनजातीय समाज के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए 'शानी' ने इस समाज की प्रमुख समस्याओं को अपनी कहानियों के माध्यम से आइना दिखाया है। इनकी कहानियों में पात्र जीवन्त रूप में अभिनय करते हुए प्रतीत होते हैं। इन कहानियों में जनजातीय समाज के लोगों के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का हास्य और रूदन स्पष्ट दृष्टिगत होता है।

मुख्य शब्द– जनजाति, कहानी, पात्र, आदिवासी, समाज, टैक्स, बाजार, युवती, युवक, भातलाँदा, घोटुल, असफल, कथावस्तु।

गुलशेर अहमद खाँ 'शानी' का जन्म सन् 1933 में मध्य प्रदेश के बस्तर जनपद के जगदलपुर में हुआ था जो वर्तमान में छत्तीसगढ़ प्रान्त के अन्तर्गत आता है। बस्तर क्षेत्र जनजातीय क्षेत्र के रूप में जाना जाता था। यहाँ विकास की धारा अवरुद्ध थी। समाज विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त था। जीवन निर्वाह बड़ा दुष्कर था। ऐसे क्षेत्र में जन्म ग्रहण करने से गुलशेर अहमद खाँ 'शानी' को जनजातीय जीवन की समस्याओं से रूबरू होने का अवसर प्रतिदिन– प्रतिक्षण प्राप्त होता रहा। 'शानी' जीवन भर विभिन्न समस्याओं और संघर्षों से जूझते रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि इनकी कहानियों में भी इनका जीवन–संघर्ष अपनी समस्त संवेदनाओं के साथ जीवन्त हो उठा। जीवन के सारे कटु–मधुर अनुभव बड़ी ईमानदारी से इनके साहित्य में स्थान पाते हैं। आजीवन अपनी शर्तों पर जीवन जीने वाले गुलशेर खाँ 'शानी' किसी एक वर्ग, समुदाय को प्रसन्न नहीं कर पाए न ही किसी मजहब, सम्प्रदाय के प्रिय चहेते बन पाए। 'शानी' यह भलीभाँति जानते थे कि बाह्य दृष्टि से विकसित और सभ्य दिखाई पड़ने वाले इस मन का अवचेतन रूप समाज की सड़ी गली मान्यताओं, रूढ़ियों व रीति–रिवाजों से श्रृंखलाबद्ध है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

'शानी' की पहली कहानी भैरव प्रसाद गुप्त द्वारा सम्पादित 'कहानी' पत्रिका में सन् 1957 में प्रकाशित हुई। तत्कालीन समय में 'कहानी' पत्रिका में कहानी का प्रकाशन होना एक बड़ी बात मानी जाती थी। 'शानी' ने अपने जीवनकाल में लगभग 70 कहानियों की रचना की। 'शानी' की कहानियों को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा जा सकता है। प्रथम भाग के अन्तर्गत वे कहानियाँ आती हैं जिनमें मुस्लिम परिवेश से आच्छादित और उनके अभावों, त्रासदियों और संघर्षों का वर्णन पाया जाता है। यह कहानी वर्ग भारत विभाजन के उपरान्त मुसलमानों के अल्पसंख्यक होने की विभीषिका तथा उनके मानसिक संघर्षों और द्वन्द्वों को पहचान पर लगे प्रश्नचिन्ह की समस्या को प्रगट करता है। द्वितीय भाग के अन्तर्गत कस्बाई, महानगरीय बोध तथा इस समाज में व्याप्त नैतिक पतन, भ्रष्ट सामाजिक राजनैतिक व्यवस्था को व्याख्यापित करता हुआ 'मैं' पात्र इस सत्य से परिचित कराता है। इसी के साथ तृतीय भाग के अन्तर्गत आने वाली कहानियों में आदिवासी समाज की आन्तरिक समस्याओं और उनकी संवेदनात्मक आवश्यकताओं को बड़े प्रामाणिक और विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

'शानी' स्वयं एक आदिवासी (जनजातीय) क्षेत्र के निवासी थे। उनके निवास क्षेत्र का भूगोल, संस्कृति और समाज बस्तर के जनजातीय जनजीवन की क्रियाविधियों से पूर्णतः अभिसिंचित है। 'शानी' के द्वारा लिखित प्रायः सभी उपन्यास बस्तर क्षेत्र में निवास करने वाले जनजातीय परिवेश को लेकर लिखे गए हैं। इनमें प्रायः जगदलपुर और अबूझमाड़ ही दर्शित होता है। इस क्षेत्र से 'शानी' का लम्बा और अति आत्मीय सम्बन्ध और सम्पर्क रहा है। 'शानी' की अनेक कहानियाँ उस जनजातीय समाज को अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं जिसे आज का अपने को सभ्य समाज समझने वाला समाज आदिम संस्कृति के नाम पर सेक्सवर्जनाओं के रूप में स्वीकार करता है। 'शानी' एक अन्तर्भुक्त व्यक्ति की भाँति इस जनजातीय समाज की अंदरूनी समस्याओं और संवेगों को पूरी निष्ठा से अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। इन कहानियों में जनजातीय जीवन की इतनी प्रामाणिक और सजीव अभिव्यक्ति है कि इन्हें समाजशास्त्रीय दस्तावेज भी माना जा सकता है। 'चील', 'फांस', 'बोलने वाले जानवर', 'वर्षा की प्रतीक्षा', 'मछलियाँ' आदि इसी प्रकार की कहानियाँ हैं जो जनजातीय जीवन का सीधा–सादा और सच्चा रूप सामने लाती हैं। 'चील' कहानी का प्रारम्भ अपने परिवेश के चित्रण से होता है– "दोपहर की सीधी खड़ी धूप अमराई के बाहर टूटकर फैली थी। उसमें सामने वाले अनगिनत पेड़ों की हरी गाढ़ी या कोमल पीकों वाली गुलाबी पत्तियाँ चमक रही थीं। कभी जब हवा उधर से ही होकर आती तो शाल पत्तों की गंध के साथ कई अनजाने पेड़–पत्तों की महक आ जाती और टोकी को लगता कि जंगल अब फिर जवान हो रहा है।"[1]

'चील' कहानी की कथावस्तु आकार में बहुत छोटी दिखती है लेकिन आशय, मन्तव्य में बहुत बड़ी है। यह एक बाजार का दृश्य प्रस्तुत करती है जहाँ जनजातीय समूह के लोग अपनी वन–उपज बेचने आते हैं। इस कहानी की प्रमुख पात्र टोकी एक आदिवासी महिला है। दुर्भाग्य से जिसका पति सलपी के पेड़ से रस एकत्र करते समय पेड़ से गिरकर मृत्यु को प्राप्त हो गया है। इस कहानी में जनजातीय समाज का जीवन आदिम और निष्ठुर रूपों में दिखाया गया है। वर्तमान समय में जनजाति समूहों की सहायता और विकास के बड़े–बड़े दावे करने वाली सरकारें मौजूद दिखाई पड़ती हैं परन्तु सत्य यह है कि जनजातीय क्षेत्रों में एक बाजार बड़ी कठिनाई से संचालित हो पाता है और इस बाजार में भी एक सरकारी आदमी की नियुक्ति की जाती है जो टैक्स वसूल करता है और इस कार्य को बड़ी मुस्तैदी से परवान चढ़ाता है–

"यह बात टोकी को कभी समझ नहीं आई कि चीजें वे लाएँ, खरीदे कोई और, लेकिन सरकारी आदमी सिर्फ इस बात पर टैक्स वसूल करे कि वे बाजार में आकर बैठते हैं। कोई चाहे न चाहे, दे सकने

की हैसियत हो या नहीं, कानून तो अपनी जगह है। स्वयं उसने सभीत आँखों से उस आदमी की ओर देखा और उसकी पीठ पर पलक रोक, धड़कता जी लिए प्रार्थना करने लगी कि भगवान के लिए वह इधर पलट कर न आए...न आए.... ।"[2]

'शानी' ने इस वास्तविकता को और अधिक मार्मिक बनाने के लिए एक चील का रूपक दिया है जो झपट्टा मार कर बटेर को उठा ले जाती है। कहानी के अन्त तक पहुँचते पहुँचते टैक्स वसूलने वाला सरकारी आदमी भी टोकी की दुकान तक पहुँच जाता है। इन बाजारों में जनजातीय लोगों से एक अलग स्तर पर एक विशेष प्रकार का शोषण किया जाता है जिसे टैक्स कहते हैं। आर्थिक त्रासदी से गुजरते हुए जनजातीय समूह के लोग जहाँ एक ओर स्वयं के लिए दो वक्त के लिए भर पेट भोजन की व्यवस्था नहीं कर पाता है, वह न ही टैक्स को जानता है न समझता है और न ही टैक्स देना चाहता है। किसी प्रकार टैक्स अदा करने के बाद भी ये जनजातीय समूह के लोग अपनी मूल आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं कर पाते हैं। सप्ताह में एक दिन लगने वाले इन हाटों में जनजातीय समूह के लोगों की वस्तुओं की उचित व भरपूर आपूर्ति नहीं हो पाती है। संसाधनों और वस्तुओं की समय पर आपूर्ति न होने से ग्राहक लम्बे समय तक इंतजार नहीं करता है इसलिए सप्ताह में एक दिन लगने वाले ये हाट (बाजार) जनजातियों के लिए आर्थिक गतिविधियों का सुगम मार्ग नहीं बन पाते हैं। इन बाजारों से सरकार टैक्स वसूलती है और जनजातीय समूह के लोगों की आर्थिक तंगी और अधिक बढ़ जाती है। यह चील सरकारी टैक्स है।

"फाँस" कहानी एक अनब्याही जनजातीय युवती की व्यथा–कथा है। जनजातीय समाज में प्राथमिक और सामुदायिक सम्बन्धों का स्वरूप अलग–अलग तरह का होता है। पश्चिमी देशों में जिस तरह क्लब होते हैं उसी प्रकार इन जनजातीय समूहों में 'घोटुल' होते हैं। इन 'घोटुलों' में इस समाज के युवा होते लड़के–लड़कियाँ एक दूसरे से अतरंग परिचय प्राप्त करते हैं। उनके बीच प्रेम तथा वैवाहिक सम्बन्ध इन्हीं 'घोटुलों' में ही तय हो जाते हैं। जनजातीय समूहों की मौज–मस्ती का आधार जहाँ गीत, कहानी और घोटुल जैसी संस्था होती है। घोटुल संस्था में अविवाहित युवक युवतियाँ एक दूसरे को जाँचते, परखते एवं समझते हैं और इसके पश्चात विवाह बन्धन में बंधते हैं। विवाह बन्धन में बंधने वाला दाम्पत्य परस्पर विश्वास और समर्पण की सभी शर्तों को निभाता है। ऐसे ही घोटुल में नीको का परिचय कोसा नाम के एक युवक से हो जाता है। वह उन क्षणों को कोसती है जब घोटुल का जरा सा परिचय उसके लिए जान लेवा बन गया था क्योंकि "न जाने कब और कैसे उसकी आँखों में धूल डालकर एक और लड़की मासे से मिलता रहा था। जब मासे के माँ बनने की खबर गाँव भर में फैली तो कोसा का नाम लिया जाने लगा। बात फैलने पर रस्म और पंचायत के मुताबिक कुछ रुपए एक सुअर, मुर्गी और बिरादरी के लोगों की भात लाँदा देकर कोसा ने मासे से ब्याह कर लिया और विपत्ति से कट गया, लेकिन वह?"[3]

'फाँस' कहानी इसकी मुख्य पात्रा नीको के असफल प्रेम की एक सफल कहानी है और इसका कथानक रिश्ते आने के बाद भी नीको के बिन ब्याही रह जाने की है। नीको के समुदाय में जहाँ युवक स्वयं विवाह का मूल्य चुकाता है और दान–दहेज जैसी कोई बात भी नहीं होती वहाँ भी एक लड़की बिनब्याही रह जाती है। यद्यपि वह अपने प्रेमी कोसा से अथाह प्रेम करती है परन्तु उसके विवाह होने के पश्चात वह उस ओर जाना भी पाप समझती है। वह अपनी उम्र का हिसाब लकीरें खींचकर रखती है। हर नए वर्ष के लिए एक नई लकीर। इस तरह वह तीस वर्ष की हो जाती है। यह कहानी शानी की स्त्रियों के प्रति विरल संवेदना का रूप प्रस्तुत करती है।

'वर्षा की प्रतीक्षा' भी जनजातीय परिवेश में स्त्री–पुरुष सम्बन्धों को व्याख्यापित करने वाली कहानी है। इस कहानी के वातावरण का चित्रण जनजातीय समुदाय के परिवेश की जटिल अर्थच्छवियों को पाठकों के लिए बड़ी सहजता से किया गया है। आदिवासियों की घोटुल संस्था का उल्लेख इस कहानी में भी है। घर जमाई रखने के लिए 'लमहादा' नामक रिवाज का उल्लेख है। इस कहानी में कुंवारे ही रह गए कुहरामी नामक एक युवक की व्यथा का वर्णन है, जो अनाथ होते हुए भी कई रिश्ते निभा रहा है। कोहरामी अपने काका–काकी के साथ निवास करता है। काका एक नसेड़ी व्यक्ति है जो किसी विधवा के यहाँ पड़ा रहता है। काकी अपनी पुत्री मंगली के साथ कुहरामी के सहारे ही जीती है। वह कोहरामी के नीरस जीवन से बहुत व्यथित रहती है और बार–बार 'लमहादा' पर विवाह कर लेने की सलाह देती है। लेकिन लमहादा के लिए सारे बन्दोबस्त कुहरामी कैसे करे? कुहरामी कहानी में कहता है, "ब्याह के लिए दस रुपए, सुअर, मुर्गी और बिरादरी वालों के लिए लाँदा–भात कहाँ से लाऊँगा?"[4]

कुहरामी कभी 'घोटुल' नहीं जाता था। उसका व्यक्तित्व ही कुछ इस प्रकार का बन गया था– गाँव या आसपास की कोई भी लड़की कुहरामी से नहीं झेंपती थी। पता नहीं क्यों, उसे अविवाहित और कुँवारे लोगों में लड़कियों ने कभी शामिल नहीं किया और चाहे वह नदी हो या खेत, जंगल हो या घर, नाच की जगह हो या घोटुल, उससे इस ढंग से बातें करतीं जिसमें न नवयुवतियों की लज्जा होती न प्रेम न ललक। चेहरे पर बड़ा ठंडा और बेजान–सा भाव होता, जैसे किसी पर तरस खाने पर आता है और जिसे कुहरामी झेल नहीं पाता।"[5] कुहरामी पर अपनी काकी को ही रख लेने का आरोप भी यदा–कदा लगता ही रहता है। अन्त में मलको कुहरामी के लिए अपनी किसी सखी का लमहादा निश्चित करती है और कुहरामी भी जैसे–तैसे इस बात के लिए तैयार हो जाता है और उधर उसकी काकी एक बार फिर माँ बनती है– "अकस्मात भीतर से कुहरामी को आवाज देती और घबराई हुई–सी मंगली दौड़ी आई और उसके साथ ही कमरे से अभी जन्मे बच्चे के रोने की आवात।[6]

इस बच्चे के जन्म के बाद कुहरामी नहीं जा पाया क्योंकि वह जानता है– कुहरामी गाँव छोड़कर चला गया तो काकी मर जाएगी और उसकी लाश फेंकने के लिए गाँव से कोई नहीं जाएगा।"[7]

इस कहानी से यह स्पष्ट है कि व्यक्ति का परिवार केवल मौन–जीवन से ही नहीं बनता है। इसके भावनात्मक आधार भी हो सकते हैं। काकी जो कि पति की उपेक्षा और पीड़ा से त्रस्त है, के कुहरामी से कोई दैहिक सम्बन्ध नहीं है लेकिन परिवार का एहसास उतना ही है। इन परिस्थितियों में कुहरामी अपनी काकी, उसकी बेटी मंगली और नवजात बच्चे के साथ उसे अकेला छोड़कर अपना स्वयं का परिवार नहीं बसा सकता। वह भी तो उसी परिवार का अंग है। यह कहानी जनजातीय समुदाय की रस्मों और जीवन का अन्तरंग परिचय देते हुए मनुष्यता की मूल भावना और मानवीय सम्बन्धों को व्याख्यापित करती है जो सभी मनुष्यों में एक प्रकार के ही होते हैं।

'बोलने वाले जानवर' की कथावस्तु मात्र इतनी है कि एक विदेशी दंपत्ति अबूझमाड़ के जनजातियों की खोज में उनके गाँव पहुँचते हैं। वहाँ वे कुछ दिन रहकर लौट आते हैं। गाँव में निवास अवधि के समय घटित होने वाली घटनाओं से ही कहानी की संरचना हुई है। मि. जोंस एक नृतत्वशास्त्री हैं और उनकी पत्नी उनके साथ भारत दर्शन के उद्देश्य से आई हैं। अबूझमाड़ की परिधि में बसे जिस गाँव में वे पहुँचते हैं वह फिलहाल खाली है। कारण है, "दिन में लोग गाँव में नहीं मिलते। सुबह होते ही पहाड़ी पर चढ़ जाते हैं और वहाँ से शाम के पहले नहीं लौटते।[8] यह गाँव स्थायी नहीं है–

"आज इस पहाड़ पर खेती है तो नीचे का आठ झोपड़ियों वाला गाँव बसा है। दो बरस बाद आकर देखिए तो यह जगह छोड़ लोग दूसरी जगह पर चले जाएँगे और यह गाँव खाली हो जाएगा।[9]

इस तरह का जनजातीय समूहों का अस्थायी रहन–सहन वास्तव में पर्यावरण को सुरक्षित और संरक्षित करता है। जनजातीय समूह के लोग जानते हैं कि धरती का दोहन एक सीमा तक ही करना उचित है। इसलिए वे कुछ समय जमीन के टुकड़े पर खेती करके उसे पुनः उर्वर होने के लिए छोड़ देते हैं। इस कहानी की पात्र वनजामी एक आदिवासी युवती है उसे देखकर मिसेज जोंस पर उसका प्रभाव कुछ इस प्रकार पड़ा है– "कुछ देर पहले जब जली हुई अंगीठी के राख फैले ढेर के पास तीन पत्तल बिछे और खाना बन जाने की सूचना के साथ हमें ले चलने के लिए वनजामी निकट आ खड़ी हुई तो मिसेज जोंस ने भरपूर आँखें से वनजामी की ओर देखा और तत्काल ही अपने पर नजरें फिसलाती दूसरी ओर ताकने लगीं। मिसेज जोंस पूरी तरह क्यों देख नहीं पाईं? शायद उन्हें लगा हो कि वनजामी एक जवान लड़की है और इतने सारे पुरुषों के बीच इतने कम कपड़ों में– लगभग नंगी– खड़ी है।"[10]

इस स्थिति में पश्चिमी देशों की कथित नग्नता पूरब में स्थित भारत की आदिम प्रजाति की स्थिति से नजर मिलाने में सक्षम प्रतीत नहीं होती। 'शानी' की अन्य कहानियों की भाँति इस कहानी में भी 'घोटुल' का उल्लेख है। जनजातीय समाज में 'घोटुल' संस्था के माध्यम से ही युवतियों को जीवन साथी चुनने की प्रक्रिया पूर्ण होती है। घोटुल वास्तव में आमोद–प्रमोद, मनोरंजन की एक संस्था है जिसमें जीवन की पूर्णता को दृष्टिगत रखते हुए विवाह के अधिकार को पूर्ण करने में मदद मिलती है।

कहानी में उल्लिखित गाँव में मिसेज जोंस को सुअर का एक नवजात गुलाबी बच्चा प्राप्त होता है जिस पर वह अपना प्रेम न्योछावर करती है। मिसेज जोंस की दृष्टि में सुअर का बच्चा ज्यादा अच्छा है क्योंकि वह बोलता नहीं है और किसी वस्तु की माँग भी नहीं करता है। ग्रामीण भी उनके लिए एक प्रकार से जानवर ही है जिन्हें देखने वे बहुत दूर से पधारी है। लेकिन ये (ग्रामीण) बोलने वाले जानवर हैं।

'शानी' द्वारा लिखित 'मछलियाँ' इसी विषय पर केन्द्रित दूसरी चर्चित कहानी में आगणित की जाती है। इस कहानी में एक दस साल के बच्चे मासा के कार्य, व्यवहार और समुदाय की कठिनतम स्थितियों का वर्णन किया गया है। अपनी कठिनतम स्थितियों में गुजर–बसर करते हुए मासा बाहर से आए हुए लोगों से एक आत्मीय सम्बन्ध बना लेता है। शोध हेतु आए हुए मिस्टर और मिसेज कैरोल के साथ उनकी भाषिक कठिनाई को दूर करने के लिए सत्येन्द्र दुभाषिए का काम करता है। मासा कैरोल को पेपी (ताऊजी) कहता है। कैरोल दम्पत्ति ने एक बिल्ली पाल रखी है जिसका नाम पुसाल है। मछली खाने की शौकीन पुसाल बिल्ली के लिए मासा मछलियाँ पकड़ कर लाता है। जनजातीय बीहड़ क्षेत्रों में मछलियाँ पकड़ पाना कठिन काम है।

"शानी" जनजातीय समाज के जटिल एवं सरल भावात्मक सम्बन्धों को अपनी कहानियों में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। इनकी कहानियों में जनजातीय समाज के लोगों की मानवीय दुर्बलताओं से युक्त हास्य और रूदन स्पष्ट परिलक्षित होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शर्मा, जानकी प्रसाद, चील (शानी रचनावली भाग–1) शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली 2015 पृष्ठ 298
2. शर्मा, जानकी प्रसाद, चील (शानी रचनावली भाग–1) शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली 2015 पृष्ठ 300

3. शर्मा, जानकी प्रसाद, फॉंस (शानी रचनावली भाग–1) शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली 2015 पृष्ठ 235
4. शर्मा, जानकी प्रसाद, वर्षा की प्रतीक्षा (शानी रचनावली भाग–2) शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली 2015 पृष्ठ 308
5. शर्मा, जानकी प्रसाद, वर्षा की प्रतीक्षा (शानी रचनावली भाग–2) शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली 2015 पृष्ठ 304
6. शर्मा, जानकी प्रसाद, वर्षा की प्रतीक्षा (शानी रचनावली भाग–2) शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली 2015 पृष्ठ 311
7. शर्मा, जानकी प्रसाद, वर्षा की प्रतीक्षा (शानी रचनावली भाग–2) शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली 2015 पृष्ठ 309
8. शर्मा, जानकी प्रसाद, बोलने वाले जानवर (शानी रचनावली भाग–1) शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली 2015 पृष्ठ 202
9. शर्मा, जानकी प्रसाद, बोलने वाले जानवर (शानी रचनावली भाग–1) शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली 2015 पृष्ठ 201
10. शर्मा, जानकी प्रसाद, बोलने वाले जानवर (शानी रचनावली भाग–1) शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली 2015 पृष्ठ 205